फ्लिप चार्ट

जमीनी स्तर के कार्यकर्ताओं का सशक्तिकरण

फ्लिप चार्ट

जमीनी स्तर के कार्यकर्ताओं का सशक्तिकरण

विषय सूची

क्रमांक		पृष्ठ संख्या
1.	फ्लिप चार्ट को इस्तेमाल करने की विधि	1
2.	भाग क – मूल्यों का स्पष्टीकरण	5
	a. अभ्यास 1 – साथी कौन है?	9
	b. अभ्यास 2 – भरोसेमंद कौन है?	15
	c. अभ्यास 3 – फेसीलिटेटर कौन है?	21
	d. अभ्यास 4 – सामुदायिक कार्यकर्ताओं के लिए	25
3.	भाग ख – संवाद	27
	a. अभ्यास 1 – सबूत/दस्तावेज	29
	b. अभ्यास 2 – अधिकार केंद्रित	37
	c. अभ्यास 3 – कम्यूनिटी मीटिंग	43
	d. अभ्यास 4 – भागीदारी के फायदे	51
4.	भाग ग – सरकारी योजनाओं और कार्यक्रम पर संवाद	57
	a. अभ्यास 1 – निर्माण मजदूरों का पंजीकरण	59
	b. अभ्यास 2 – स्वर्ण जयंती शहरी रोजगार योजना	63
	c. अभ्यास 3 – ट्रैनिंग	68

फ्लिप चार्ट को इस्तेमाल करने की विधि

यह फ्लिप चार्ट कहानी सुनाने और आपसी संवाद के तरीके पर आधारित है। इसके माध्यम से सामुदायिक कार्यकर्ताओं (कम्यूनिटी मोबिलाइजर, SHG आउटरीच वर्कर, साथी, आशा वर्कर, आंगनवाड़ी वर्कर) में समुदाय केंद्रित संगम (Convergence) के आधार को समझने और इसको मजबूत करने में मदद मिलेगी।

यह कार्यकर्ताओं के बहु–आयामी हुनर जैसे कि समुदाय के नजरिये को समझकर सरल और आवश्यकता के अनुसार जानकारी देना, जागरूक करना, तैयार करना और प्रभावी ढंग से संवाद करने को विकसित करेगी। यहां दिए गए स्लाइड और कहानी आपस में चर्चा को बढ़ावा देती हैं, जिससे समस्याओं का हल आपसी बातचीत और सामुहिक संवाद के जरिए ढूंढा जा सके।

यह फ्लिप चार्ट को तीन भागों में बांटा गया है। जिसके माध्यम से संगम (Convergence) के मूलभूत आधार जैसे कि मूल्य स्पष्टीकरण, कार्यक्रम की अगुवाई और इसकी डिलीवरी की समझ विकसित कर आउटरीच को सुदृढ़ किया जा सकता है।

भाग क – मूल्यों का स्पष्टीकरण

भाग ख – संवाद (दस्तावेज, अधिकार केंद्रित संवाद)

भाग ग – सरकारी योजनाओं और कार्यक्रम पर संवाद

प्रस्तुतीकरण के दौरान, फ्लिप चार्ट का उपयोग करने वाले ध्यान रखे कि :

- समुदाय/व्यक्ति को कहानी के साथ बांधकर रखें और हर चरण पर उसकी भागीदारी बनाए रखें।
- समुदाय/व्यक्ति के मुताबिक किसी भी कहानी का उपयोग कर सकते हैं अगर समय की पाबंदी न हो तो पूरी कहानी आपसी संवाद के माध्यम से सुनाए।
- हर भाग के बाद चर्चा के बिन्दु दिए गए हैं। संचालक इन बिन्दुओं को कहानी के सदंर्भ में चर्चा के लिए उपयोग कर सकते हैं। समुदाय/व्यक्ति के सवालों के जवाब देने और चर्चा करने के लिए प्रोत्साहित करें। संचालक अपने विचारों से कार्यकताओं की दुविधाओं को दूर करे।
- सत्र के अंत में, मुख्य जानकारी का सार निकाले।

संचालक के लिये कुछ बातें :

- समुदाय/व्यक्ति को कहानी सुनाने के दौरान चर्चा में शामिल करें।
- फ्लिप चार्ट को समूह के हर सदस्य को दिखायें।
- कहानी सुनाने के तरीके को रोचक बनाये।
- सवाल पूछने के लिये प्रोत्साहित करें और उनकी दुविधाओं का समाधान करें।

नोट: इसमें दी गई सभी कहानियां केवल एक माध्यम है। समय, आवश्यकता एवं अनुभूति के अनुसार इसमें फेरबदल करके उपयोग में लाया जा सकता है। इसमें दिये गये दृश्य के माध्यम से नये एवं स्थानीय भागीदारों की आवश्यकता के अनुसार नई कहानियां प्रस्तुति की जा सकती है।

भाग–क

मूल्यों का स्पष्टीकरण
(Value Clarification)

उद्देश्य

समुदाय के लिए

इस भाग का उद्देश्य समुदाय (लोगों) एवं वहां पर कार्य करने वाले सामुदायिक कार्यकर्ताओं के बीच जुड़ाव को मजबूती प्रदान करना है। इसके साथ–साथ यह भी देखना है कि समुदाय कार्यक्रम के साथ कितना मजबूती से जुड़ना चाहता है। जैसा कि एक भागीदार के रूप में। इसके लिए समुदाय को एहसास होना चाहिए कि यह सामुदायिक कार्यकर्ता इस पूरे कार्यक्रम का एक अभिन्न अंग है। जो कि सरकार द्वारा चलाए जा रहे विभिन्न कार्यक्रमों को सरलता से लोगों तक पहुंचाते हैं।

यह अभ्यास समुदाय को सभी जमीनी स्तर के कार्यकर्ताओं के कार्य कौशलता को निर्धारण करने में प्रोत्साहित करेगा। जैसा कि सरकारी कार्यक्रमों को समुदाय के साथ जोड़ने का हुनर। यहां समुदाय के नजरिये को समझने को जोर दिया गया है कि वह इन कार्यकर्ताओं को किस रूप में देखना चाहते हैं कि जैसा कि

- साथी कौन है?
- भरोसेमंद कौन है?
- फेसिलिटेटर कौन है? (राह दिखाने वाला)

अभ्यास की विधिः

इस अभ्यास में दी गई कहानियों को रोचक ढंग से प्रस्तुत कर चर्चा को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। चर्चा को बढ़ावा देने के लिए कहानी में “चर्चा के विषय” में दिए गए सवालों को पूछे। इसके अलावा संचालक अपनी तरफ से भी आवश्यक सवाल पूछ सकते हैं। यह चर्चा समुदाय के नजरिये को समझने में सहायक होगा।

साथी कौन है?

सारांश

एक दिन मीना बाजार में जा रहीं थी जहां उसकी मुलाकात कविता से हो गई। उस दिन दोनों अचानक पहली बार चार साल बाद एक दूसरे से मिलते हैं। पहले दोनो एक दूसरे के पड़ौसी हुआ करते थे लेकिन मीना ने किसी और मौहल्ले में मकान ले लिया और कविता अब भी उसी मौहल्ले में रहती है।

दोनों एक–दूसरे से बड़े प्यार से मिलती है । परन्तु मिलने के दौरान मीना को यह महसूस होता है कि कविता कुछ परेशान है। मीना यह जानना चाहती है कि कविता इतनी उदास और शांत क्यों है। जब मीना ने जानने की कोशिश की तो कविता ने उसे सब कुछ ठीक है कह कर टाल दिया। मीना को लगा की कविता उससे कुछ छिपा रही है।

मीना को सबसे ज्यादा बुरा इस बात का लग रहा था कि इतनी पुरानी दोस्त होने के बावजूद कविता उससे कुछ छिपा रही है। वह सोचती है कि पहले हम दोनो कितनी सारी बाते करते थे और हर सुख–दुख एक–दूसरे से बांटते थे। लेकिन आज पता नही उसे क्या हो गया है?

फिर मीना ने अपनी दोस्ती का वास्ता देकर पूछा तो कविता बोली कि वह बहुत सारी पारिवारिक समस्याओं से जूझ रही है। उसके पति के पास कोई नियमित नौकरी नहीं है। उसका परिवार कर्ज में डूबा हुआ है। जिसकी वजह से उसके बच्चों को स्कूल से निकालना पड़ सकता है।

मीना: अरे कविता, कैसी हो? काफी दिनों बाद मिल रहे हैं और घर में सब कैसे हैं?

कविता: हॉय मीना! काफी दिनों के बाद मिल रहे हैं। मैं तो बिल्कुल ठीक हूँ। लेकिन तुम कैसी हो?

(मीना यह महसूस करती है कि कविता उदास है और वह मन ही मन कारण जानने की इच्छुक है)

मीना: लेकिन तुम्हारे चेहरे से तो नहीं लग रहा है? लगता है बहुत परेशान हो?

कविता (मुस्कारातेे हुए): नहीं ऐसी कोई बात नहीं है।

मीना: नहीं, कोई तो बात है? हमने कितने साल एक साथ गुजारे हैं। एक दूसरे के सुख-दुख बाँटे हैं। अब ऐसी कोई बात तो है जो तू मुझसे छुपा रही है। तू मुझे नहीं बताएगी तो फिर किसको बताएगी?

अरे क्या सोचने लगी? चल अब अपनी परेशानी बता। इससे तेरा मन हल्का हो जाएगा। शायद मैं तेरी कुछ मदद कर पाऊँ।

कविता (सोचते हुए) : क्या बताऊँ...

चर्चा के विषय :

1. आपको क्या लगता है पहले कविता अपनी बात मीना को क्यों नहीं बता पा रही थी उसकी क्या दुविधा रही होगी?

2. आपके विचार से एक साथी होने के नाते मीना की पहल कैसी है?

शायमा

मीना: चल उधर साईड में चल कर बैठते हैं।

कविता (हिचकिचाते हुए): अरे कुछ भी तो नहीं है। तुझे ऐसे ही लग रहा है। तुम अपने बारे में बताओ, तुम कैसी हो?

मीना (कविता का हाथ पकड़ते हुए): मैं तो ठीक हूँ। लेकिन मुझे लगता है कि तुम बहुत परेशान है... अगर तुम नहीं बताना चाहती हो तो कोई बात नहीं

कविता: अरे तुम तो नाराज हो गई। ऐसी कोई बात नहीं है। तुम तो जानती है कि बस आजकल मँहगाई इतनी बढ़ चुकी है कि इस हालात में घर का गुजारा बहुत मुश्किल हो गया है। ऊपर से मेरे पति का काम सही तरह से नहीं चल रहा है। हालात यहां तक पहुंच चुके हैं कि बच्चों की फीस भी देना भी मुश्किल हो गया है। कहीं ऐसा न हो कि बच्चों की पढ़ाई भी छुड़वानी पड़ जाए।

मीना: तुम चिंता न करो। मैं भी इस स्थिति में गुजर चुकी हूं। मैं सुनीता दीदी को जानती हूं जिन्होंने मेरी भी मदद की थी। वह तुमको भी रास्ता दिखाएगी।

चर्चा के विषय :

3. अगर आपको कोई दोस्त या जानकार ऐसी परिस्थिति में हो तो आपका क्या कदम होगा?

4. आप एक साथी में किन गुणों को देखते हैं?

भरोसेमंद कौन है?

सारांश

राधा और सीता दोनों पड़ौसी हैं। राधा स्कूल में पढ़ती है और सीता कॉलेज जाती है। राधा अकेली स्कूल जाती है। राधा को स्कूल जाने में डर लगता है क्योंकि रास्ते में कुछ आवारा लड़के उसको परेशान करते हैं। डर के मारे उसने यह बात किसी को नहीं बताई। यदि वह अपने माता–पिता को बताती है तो शायद वह राधा का स्कूल जाना बन्द करवा देगें। इस समस्या से बचने के लिए उसने दूसरे लम्बे रास्ते से स्कूल जाना शुरू कर दिया।

एक दिन उसके पड़ौस में रहने वाली सीता भी उसी रास्ते से उसके साथ अपने कॉलेज जा रही थी। कुछ दूर जाने के बाद सीता ने देखा कि राधा ने अपना रास्ता बदल दिया। यह देखकर सीता आश्चर्य में पड़ गई और सोचने लगी कि आज राधा लंबे रास्ते से स्कूल क्यों जा रही है।

तब सीता ने उससे रास्ता बदलने का कारण पूछा। राधा ने उसको जवाब देने की बजाय दूसरी बातें करनी शुरू कर दी। सीता ने सोचा कि यह मुझे क्यों नहीं बता रही है जबकि अपनी हर परेशानी मेरे साथ बांटती है आज इसे क्या हो गया है?

जबकि राधा सीता को यह बात बताने से पहले राधा यह सुनिश्चित कर लेना चाहती थी कि सीता उसके माता–पिता को इसके बारे में कुछ नहीं बताएगी। सीता ने उसकी बात सुनी और उसकी मदद करने की सोची। उसने उन लड़कों की कहीं पर भी शिकायत न करते हुए अपने दोस्तों के साथ मिलकर उनको समझाने की कोशिश की और उन्होंने राधा को परेशान करना बंद कर दिया। जिसके फलस्वरूप राधा की यह समस्या हमेशा के लिए खत्म हो गई। सीता द्वारा उठाया गया यह कदम राधा को पता नहीं चल पाया।

सीता: अरे राधा जरा ठहरो। मैं भी तुम्हारे साथ-साथ चलती हूँ

राधा: अच्छा ठीक है। जल्दी आओ मुझे देर हो रही है।

सीता: बस आई ... और तुम्हारी पढ़ाई कैसी चल रही है?

राधा: दीदी बहुत अच्छी चल रही है?
(उसी समय अचानक राधा ने अपना रास्ता बदल लिया)

सीता: अरे राधा तुम तो दूसरे रास्ते से स्कूल जाती थी? अब तुम इस लम्बे रास्ते से स्कूल क्यों जाने लगी हो?

राधा: (सोचते हुए): क्या कहूँ ... नहीं ऐसी कोई बात नहीं। दीदी जरा तेज चलते हैं। जल्दी पहुँच जाएंगे।

(सीता सोचती है कि क्या बात है? ... अगर इसे कुछ भी बात हो तो मेरे पास दौड़ते हुए आती थी। पता नहीं आज इसे क्या हो गया?)

सीता: (जोर देते हुए): लेकिन यह रास्ता तो लम्बा है और तुझे दूसरी तरफ जाना है।

राधा: (डरते हुए): प्लीज दीदी इसी रास्ते से चलते हैं ना!

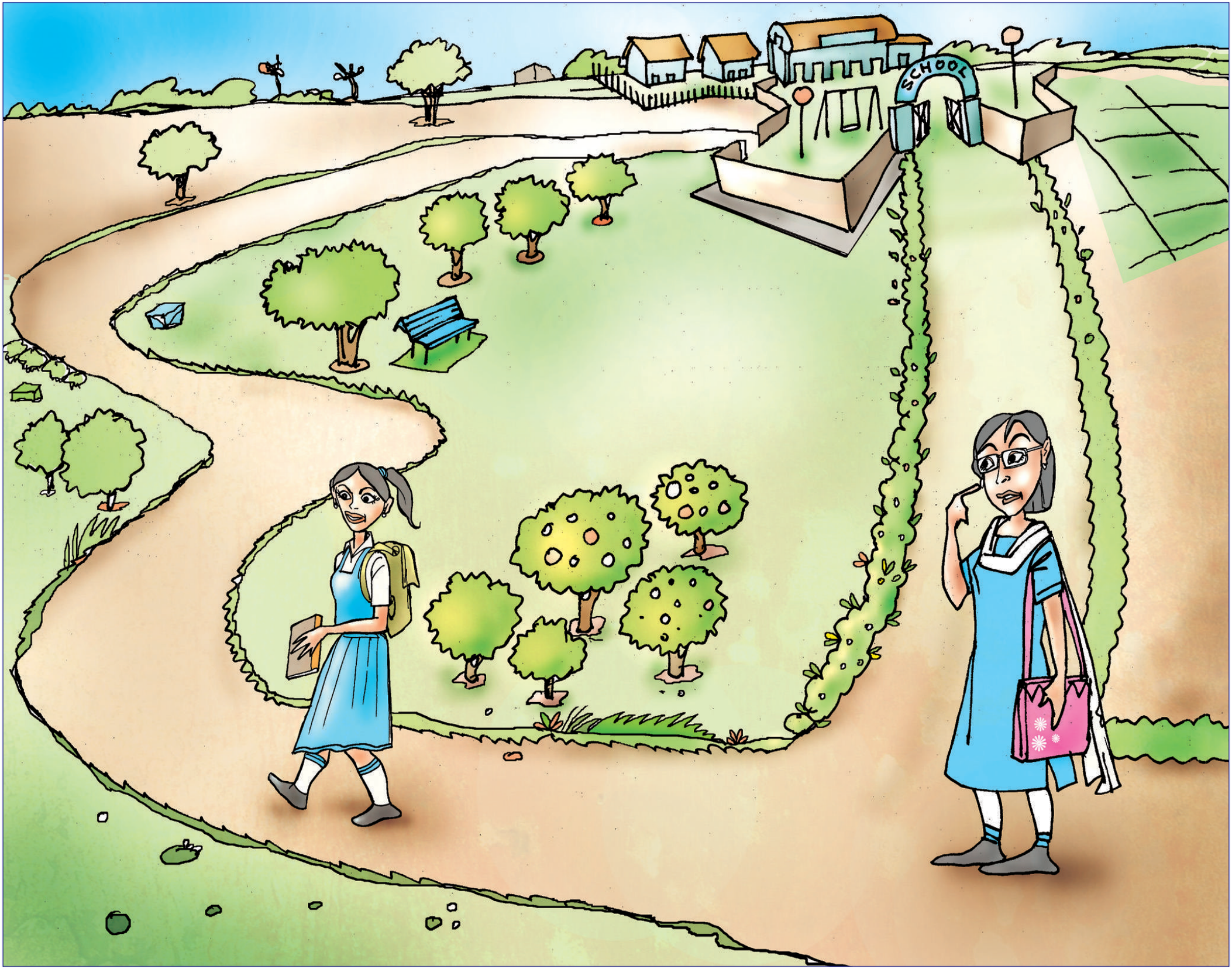
SCHOOL

सीता: मुझे बताओ तुम वहां से जाने में क्यों डर रही हो?

राधा: (डरते हुए): नहीं दीदी ऐसी कोई बात नहीं।

सीता: नहीं कोई तो बात है... अब बताओ भी सही!

राधा: (थोड़ा झिझकते हुए): दीदी, मैं सब बताऊंगी पर आप यह बात किसी को भी नहीं बताना। मेरे मम्मी-पापा को भी नहीं।

सीता: अच्छा भई किसी को भी नहीं बताऊंगी।

राधा: दीदी बात यह है कि मैं जिस रास्ते से पहले जाती थी वहाँ कुछ लड़के मुझे रोज परेशान करते थे। रोज-रोज की परेशानी से तंग आकर मैंने अपना रास्ता बदला दिया है।

सीता: अगर वह लड़के इस रास्ते पर आकर परेशान करने लगे तो तुम क्या करोगी? तीसरे रास्ते से जाओगी या फिर स्कूल छोड़ दोगी?... अगर वह तुम्हारे घर तक पहुंच गये तब तुम क्या करोगी? स्कूल छोड़ दोगी!

राधा: नहीं दीदी! मैं स्कूल छोड़ना नहीं चाहती पर मैं क्या करूं। यह सोचकर मुझे बहुत डर लगता है।

सीता: अरे इसमें डरने की क्या बात है। अगर तुम इसी तरह डरती रहोगी तो वह लड़के तुम्हे और परेशान करेगें। उनकी हिम्मत और बढ़ जाएगी। इसलिए मैं कहती हूं कि तुम हिम्मत से काम लो।

राधा: दीदी मैं तो लड़की हूँ। मैं उनका मुकाबला कैसे करूं?

सीता: कोई बात नहीं तू स्कूल जा, सब ठीक हो जाएगा।

चर्चा के विषय :

1. राधा पहले अपनी समस्या सीता को क्यों नहीं बता पाई?

2. लेकिन बाद में राधा ने अपनी बात सीता को क्यों बताई?

3. आप यहां सीता को किस रूप में देखते हैं। एक दोस्त या एक भरोसेमंद व्यक्ति के रूप में?

4. एक दोस्त और एक भरोसेमंद व्यक्ति में क्या अंतर है?

SCHOOL

फेसीलिटेटर कौन है?

सारांश

रमेश तिगड़ी के डी–ब्लॉक में रहता है जहां पर उसकी एक दूध की डेयरी है। इस काम के साथ–साथ खाली समय में वह एक कम्यूनिटी वॉलेन्टियर के रूप में भी काम करता है और हमेशा लोगों की मदद करने के लिए तैयार रहता है। इसलिए उस मोहल्ले के लोग उसकी बहुत इज्जत करते है। वो कुछ दिनों के लिए अपने गांव चला गया था। जब वापस आया तो उसे पता चला कि उसकी गली में रहने वाली रहिसा की अम्माजी की तबीयत ठीक नहीं है। तो वह तुरन्त रहिसा की अम्माजी के हाल–चाल पूछने के लिए चला गया। जब रमेश ने रहिसा से अम्मा जी की तबीयत के बारे में पूछा तो वह बोली कि पिछले सप्ताह अचानक अम्माजी की तबीयत खराब हो गई थी तो वह अम्माजी को नुक्कड़ पर बैठने वाले डॉक्टर साहब से दवाई दिलवा लाई। अब एक सप्ताह गुजर जाने के बाद भी उनकी तबीयत में कोई सुधार नहीं आया है। डॉक्टर ने भी अम्माजी की बीमारी बारे में सही से नहीं बताया।

अम्माजी की तबीयत को देखते हुए रमेश ने रहिसा को सरकारी अस्पताल में इलाज करवाने के लिए जोर दिया। पर रहिसा ने अपनी चिन्ता जताते हुए कहा कि मैं अकेली औरत अम्माजी को लेकर कहां–कहां घूमती रहूंगी। मेरे पति भी लेकर नहीं जा सकते हैं क्योंकि अगर वह एक भी दिन काम पर नहीं जाएंगे तो घर चलाना मुश्किल हो जाएगा। इस दुविधा को देखते हुए रमेश ने रहिसा को पिछली गली के सामुदायिक भवन में चलने वाले मोबाइल हैल्थ कैम्प में अपनी अम्माजी का इलाज करवाने के लिए सलाह दी। उसके साथ–साथ मोबाइल वेन से मिलने वाली सारी स्वास्थ्य सुविधाओं के बारे में भी जानकारी देता है।

रमेश: नमस्कार रहिसा बहन कैसी हो?

रहिसा: अरे! रमेश जी नमस्ते क्या बात है बड़े दिनों बाद दिखाई दे रहे हैं।

रमेश: हां बहन जरा गांव चला गया था। मैंने सुना है अम्माजी की तबीयत खराब है, क्या हुआ है?

रहिसा: पता नहीं क्या हो गया है। हमारे नुक्कड़ पर जो डॉक्टर साहब बैठते हैं उन्हें अम्माजी को दिखाया था। उन्होंने दवाई भी दी। पर एक हफ्ते से ज्यादा हो गया है अब तक तबीयत में कोई सुधार नहीं है।

रमेश: तो फिर एक काम कीजिए इस बुधवार को आप अम्माजी को लेकर हमारे डेयरी के पीछे वाली गली में जो सामुदायिक भवन है वहां पर डॉक्टर को दिखाने के लिए चले जाना।

रहिसा: वहां पर डॉक्टर बैठते हैं क्या?

रमेश: हां बहन वहां पर हर बुधवार को एक सरकारी मोबाइल वेन आती है जहां पर जरूरतमंद लोगों का मुफ्त में इलाज किया जाता है।

रहीसा: पर वहां पर तो मैं किसी को पहचानती भी नहीं हूं। क्या वह मेरी बात सुनेंगे और अम्माजी का इलाज करेंगे?

रमेश: घबराने की कोई बात नहीं। आप वहाँ पर जाइए। आप को वहाँ नफीसा मिलेगी जो एक आशा वर्कर है। वह अम्माजी का इलाज डॉक्टर साहब से करवा देगी और वहाँ से दवाई भी दिलवा देंगी। इस के साथ-साथ अगर अम्माजी को किसी बड़े अस्पताल में इलाज करवाने की जरूरत पड़ेगी तो उसकी पर्ची मिल जाएगी जिससे अम्माजी का बड़े अस्पताल में इलाज हो सकेगा।

रहीसा: ठीक है रमेशजी। धन्यवाद ! आपने तो मेरा काम आसान कर दिया है।

चर्चा के विषय :

1. क्या आपके आस-पास में रमेश जैसे कोई व्यक्ति है?

2. आप यहां पर रमेश की भूमिका को किस रूप में देखते है?

नोटः चर्चा के दौरान संचालक यह सुनिश्चित करें कि रमेश की भूमिका एक राह दिखाने वाले व्यक्ति की है।

सामुदायिक कार्यकर्ताओं के लिए

इससे पूर्व अभ्यासों में आप यह जान पाए कि एक साथी, भरोसेमंद व्यक्ति और एक राह दिखाने वाले व्यक्ति (फेसीलिटेटर) में कैसे गुण, कार्य कुशलता एवं समझ इत्यादि होनी चाहिए।

- अब आप एक जागरूक, सशक्त एवं प्रभावशाली सामुदायिक कार्यकर्ता के व्यक्तित्व को परिभाषित करें?

- अब आप स्वयं को देखें कि आप मैं ऐसे कौन से गुण होने चाहिए जिससे कि आपका समुदाय आपको एक साथी, भरोसेमंद व्यक्ति और एक राह दिखाने वाले के रूप में अपना जुड़ाव महसूस कर सकें?

भाग-ख

संवाद
(Communication)

उद्देश्य :

इस अभ्यास के दौरान सामुदायिक कार्यकर्ताओं में संवाद कौशल एवं कार्य दक्षता को मजबूत करना है। जिसके फलस्वरूप वह साक्ष्य/दस्तावेज एवं अधिकार केंद्रित भाषा का समुदाय के हित के लिए इस्तेमाल कर सकें।

सबूत/दस्तावेज केंद्रित
(Evidence Centered)

उद्देश्य :

साक्ष्य/दस्तावेज पर आधारित संवाद कौशल सभी भागीदारों में साक्ष्य को इस्तेमाल करने की हुनर को बढ़ाएगा जिससे कि वह किसी भी परिवार की सामाजिक (Social) एवं कार्य संबंधी (occupational) असुरक्षा के प्रभाव का सही आंकलन कर सकें।

इस अभ्यास का मुख्य उद्देश्य समुदाय को सशक्त करना है जिसके माध्यम से वह अपनी जरूरतों को प्रभावी ढंग से सामने रख सकें। दूसरी तरफ समुदाय में स्थित सभी कार्यकर्ताओं में साक्ष्य/दस्तावेज को एकत्रित एवं प्रस्तुत करने के कौशल को उभार सके।

अभ्यास की विधि :

समुदाय में स्थित सभी सामुदायिक कार्यकर्ताओं को विभिन्न परिवारों की केस स्टडी दी जाए। जिसके आधार पर वह संभावित हकदारों के पारिवारिक लेखा–जोखा तैयार कर सके और असुरक्षा का सही आंकलन कर सकें।

केस स्टडी

नाम : महेश्वर

आयु : 50 वर्ष

पता : मकान नं० 156, ओम नगर, मीठापुर, बदरपुर

महेश्वर एक निर्माण मजदूर है। उसके परिवार में 9 सदस्य हैं। उसकी मां, पत्नी, तीन बच्चे, छोटा भाई, छोटे भाई की पत्नी और उसका 1 बच्चा। महेश्वर और उसकी पत्नी पूजा दोनों निर्माण मजदूर हैं। महेश्वर की मां सावित्री दिल की मरीज हैं और उनका इलाज सरकारी अस्पताल में चल रहा है। पर उनकी दवाईयों का खर्चा परिवार वहन नहीं कर पा रहा है।

महेश्वर का बड़ा बेटा कमल 6 कक्षा में सरकारी स्कूल में पढ़ रहा था उनके नए किराए के घर में जाने से पहले तक। अब इस नई जगह में कोई भी सरकारी स्कूल न होने के कारण उसका स्कूल जाना बन्द हो गया है। अन्य दो बच्चे पास के एक स्कूल में पढ़ रहे हैं।

महेश्वर का छोटा भाई रमेश भी उनके साथ ही रहता है। रमेश भी निर्माण मजदूर हैं लेकिन उसका एक हाथ निर्माणस्थल पर कार्य करते समय दुर्घटना में कट गया था। रमेश की पत्नी सड़क के किनारे चाय की दुकान चलाती है। रमेश अपनी गरीबी के कारण बच्चों को स्कूल ही नहीं भेज पा रहा है।

महेश्वर जो कुछ भी कमाता है उसी से अपनी मां और भाई की देखरेख करता है। वह पैसों की कमी की वजह से दोनों का इलाज नहीं करवा पा रहा है।

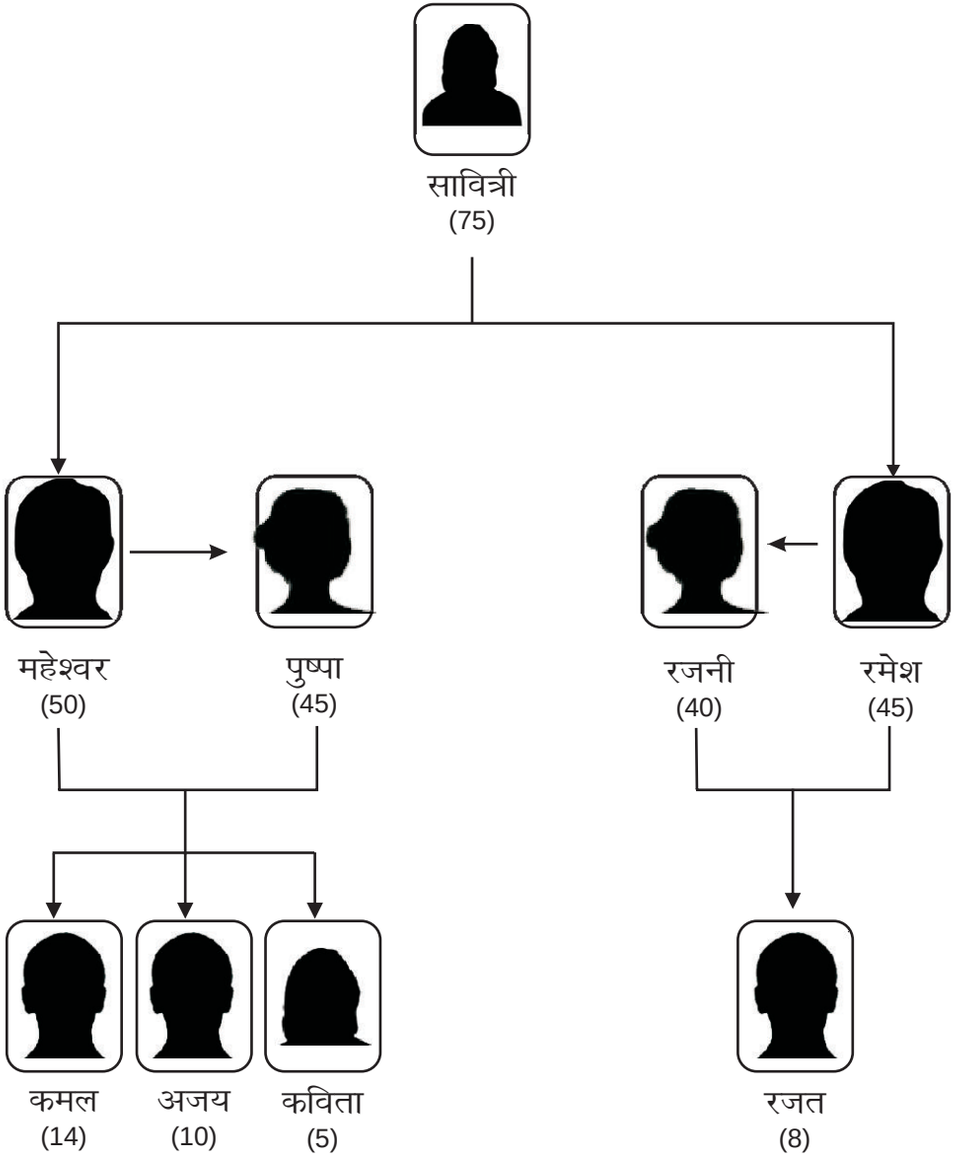

अभ्यास 1 :

इस परिवार के सदस्य किस प्रकार की असुरक्षा से जूझ रहे हैं?

पुष्पा (पत्नी) _____

सवित्री (माँ) _____

रमेश (भाई) _____

रजनी (भाई की पत्नी) _____

कमल (महेश्वर का बेटा) _____

अजय (महेश्वर का बेटा) _____

कविता (महेश्वर का बेटी) _____

रजत (रमेश का बेटा) _____

मैं इस परिवार को किस प्रकार की सेवाओं/योजनाओं का लाभ उपलब्ध करवा सकता हूं?

योजनाएं :

- निर्माण मजदूर का पंजीकरण
- मोबाइल वेन डिस्पेंसरी
- दिल्ली आरोग्य निधि
- वृद्धावस्था पेंशन
- स्वर्ण जयन्ती शहरी रोजगार योजना
- जी.आर.सी. केंद्र द्वारा चलाई जा रहे योजाएं
- अन्य

चर्चा के विषय :

- इस परिवार की कमजोरियों को कम करने के लिए आप पहले कौन सा कदम उठाएंगे?
- कौन योजना का हकदार है और क्यों?
- ऐसी कौन सी योजनाएं हैं जिनका लाभ इस परिवार के सदस्यों को सरलता से दिया जा सकता है?
- ऐसी कौन सी योजनाएं हैं जिनका लाभ इस परिवार के सदस्यों को पहुंचाने में कठिनाई आ सकती है?
- यदि मैं बीच में पड़ता हूँ तो परिवार का क्या होगा?
  - यदि मैं केवल योजनाओं के साथ जोड़ता हूँ तो क्या इस परिवार की असुरक्षा खत्म हो जायेगी?
  - यदि मैं संपूर्ण सुरक्षा तंत्र (Safety Net) उपलब्ध करवाता हूँ तो इस परिवार का क्या होगा?
  - मैं इस परिवार को आने वाले तीन सालों में कहाँ देखना चाहता हूँ?

अधिकार केन्द्रित
(Rights Centred)

उद्देश्य :

अधिकार केंद्रित संवाद कौशल का उद्देश्य सभी सामुदायिक कार्यकर्ताओं को पूरी तरह से सक्षम बनाना है। जिससे कि वह हकदारों को यह समझाने में सफल हो पाएं कि योजनाओं का लाभ प्राप्त करना उनका अधिकार है।

अभ्यास की विधि :

सामुदायिक कार्यकर्ताओं को विभिन्न परिवारों की केस स्टडी दी जाए तथा उनसे कहा जाए कि वह उस परिवार किस तरह से बताएंगे कि योजना का हक पाना उनका अधिकार है।

अधिकार केन्द्रित (Rights Centred)

सारांश

कस्तूरी देवी एक गर्भवती महिला है जो उत्तरी–पूर्वी दिल्ली के सीमापुरी इलाके के सनलाइट कॉलोनी में रहती है। उसके पति एक रिक्शा चालक हैं जो महीने में लगभग ₹2500 से ₹3000 तक कमा लेते हैं। इसमें उसको रिक्शे का किराया देने के साथ–साथ मकान मालिक को कमरे का भाड़ा भी देना पड़ता है। कुल मिलाकर बची हुई कमाई से पूरे महीने का गुजारा मुश्किल से हो पाता है।

कस्तूरी देवी एक मिलनसार महिला है। पड़ौस में सब के साथ उसका बहुत अच्छा रिश्ता है। एक दिन वह अपनी पड़ौसन विमला के घर में टीवी देख रही थी तब जननी सुरक्षा योजना के बारे में विज्ञापन आया। उस विज्ञापन में दिखाया गया कि इस सुविधा का लाभ गरीबी रेखा के नीचे रहने वाली गर्भवती महिलाओं को सरकारी अस्पताल में प्रसव करवाने पर ही मिलता है। तब उसे लगा कि वह भी इस सुविधा का लाभ उठा सकती है। उसने अपनी पड़ौसी विमला से इसके बारे में पूछा तो उसने कहा कि पुरानी सीमापुरी में दिल्ली सरकार का एक सेंटर है जहां पर सरकार द्वारा चलाई जा रही सभी योजनाओं की जानकारी मिलती है। अगर तुम चाहो तो हम वहाँ जानकारी लेने के लिए जा सकते हैं।

दूसरे दिन कस्तूरी देवी और विमला दोनों पुरानी सीमापुरी के सेंटर में जाते हैं और वहाँ की हैल्प डेस्क आफिसर रचना से आवश्यक जानकारी के बारे में पूछते हैं। तब रचना उन्हें जननी सुरक्षा और ममता जैसी योजना के बारे में सही ढंग से समझाती है। उसमें वह इन योजनाओं को प्राप्त करने के लिए पात्रता के बारे में भी बताती है ओर इन्हे प्राप्त करने के लिए आवश्यक दस्तावेजों के बारे में भी जानकारी देती है।

विमला: नमस्ते मैडम जी, मेरा नाम बिमला है।

रचना: नमस्ते, आइए बैठिए, बताइए कैसे आना हुआ।

विमला: दीदी यह मेरी पड़ौसन कस्तुरी है जो सबलो खड्डा में रहती है। वह कुछ जानकारी लेना चाहती है।

रचना: बताइए कस्तुरी जी आप को किस तरह की जानकारी चाहिए?

कस्तुरी: दीदी कल मैंने जननी सुरक्षा योजना के बारे में टी वी में देखा। उसमें बता रहे थे कि इस का लाभ गर्भवती महिलाओं को मिल सकता है।

रचना: आपने सही सुना है। लेकिन यह सुविधा केवल गरीबी रेखा के नीचे रहने वाली गर्भवती महिलाओं को किसी भी सरकारी अस्पताल में अपना नाम पंजीकृत करवाने के बाद प्रसव (केवल 2 प्रसव) करवाने पर मिलता है।

कस्तुरी: क्या योजना के लिए मैं भी हकदार हूँ?

रचना: यह जानने के लिए मुझे पहले आप से जानकारी लेनी पड़ेगी। आप बताइए कि आपके पति क्या काम करते हैं, और कितना कमा लेते हैं?

कस्तुरी: मेरे पति रिक्शा चलाते हैं। महीने में ₹2500 से ₹3000 रुपये तक कमा लेते हैं। रिक्शे का किराया और घर का भाड़ा देने के बाद जितना बचता है उसमें मुश्किल से हम दोनों का गुजारा हो पाता है।

रचना: हाँ, आप जितनी कमाई बता रही हैं उसके हिसाब से आप को इस योजना का लाभ मिल सकता है। परन्तु उसके लिए आपकी उम्र 19 साल से ज्यादा होना चाहिए और यह आप का पहला या दूसरा प्रसव होना चाहिए।

कस्तुरी: दीदी मेरी उम्र तो 20 साल है और मैं पहली बार गर्भवती हुई हूँ।

रचना: तो फिर इस योजना के नियम के अनुसार आप इसे प्राप्त करने के लिए सही हकदार हैं। पर इसके लिए आाप को आवश्यक दस्तावेजी प्रमाण जमा करवाने पड़ेंगे।

कस्तुरी: दीदी मुझे किस तरह के प्रमाण संबंधी दस्तावेज देने पड़ेंगे?

चर्चा के विषय :

1. क्या आप कस्तूरी देवी को जननी सुरक्षा योजना का हकदार के मानते हैं? (हां/नहीं)
2. कौन – कौन सी आवश्यक योग्यताएं हैं जो कि कस्तूरी को इस योजना की हकदार बनाती हैं?
3. आप कस्तूरी देवी को कैसे बतायेंगे कि जननी सुरक्षा योजना आपका अधिकार है?
4. आप कस्तूरी देवी को कौन सी अन्य योजनाओं/कार्यक्रम के साथ जोड़ सकते हैं?

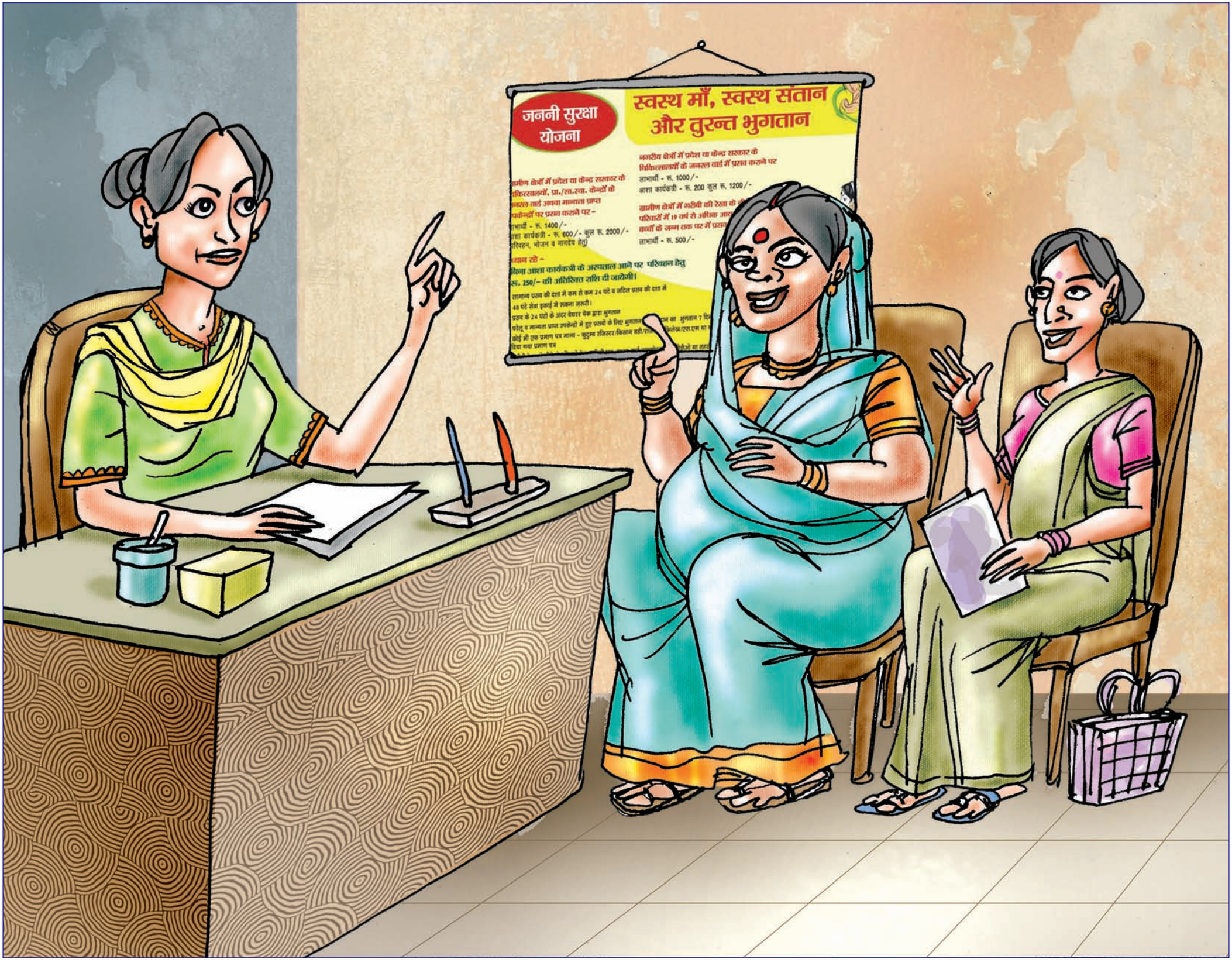

जननी सुरक्षा योजना
स्वस्थ माँ, स्वस्थ संतान
और तुरन्त भुगतान
नगरीय क्षेत्रों में प्रदेश या केन्द्र सरकार के
चिकित्सालयों के जनरल वार्ड में प्रसव कराने पर
लाभार्थी - रू. 1000/-
आशा कार्यकत्री - रू. 200 कुल रू. 1200/-
लाभार्थी - रू. 500/-

कम्युनिटी मीटिंग
(Community Meeting)

सारांश

पवन “स्त्री शक्ति” नामक जी.आर.सी. में एक कम्यूनिटी मोबिलाइजर के रूप में काम करता है। वह दिल्ली सरकार द्वारा किये गये शहरी गरीबों की पहचान के लिए सर्वे में भी शामिल था। सर्वे के आंकड़ों से जी.आर.सी. को पता चला कि नांगलोई के रनहौला गांव में 65 प्रतिशत से अधिक परिवार निर्माण मजदूर संबंधित कामों में लगे हुए हैं। जी.आर.सी. में एक मीटिंग के दौरान यह तय किया गया कि रनहौला गांव में निर्माण मजदूरों को उनके कार्य संबंधित अधिकारों को बताने के लिए और उनका पंजीकरण के लिए वहां के प्रधान एवं अन्य कम्यूनिटी वॉलिन्टर की मदद से एक चौपाल बुलानी चाहिए।

इस मीटिंग में यह भी तय किया गया कि निर्माण मजदूरों को उनके अधिकार एवं पंजीकरण संबंधित जानकारी प्रभावी ढंग से देने के लिए इस मुद्दे से जुड़ी संस्था “निर्माण मजदूर पंचायत संगम” से रिज़वान जी को इस चौपाल में आमंत्रित किया जाना चाहिए। चौपाल को आयोजित करने के लिए पवन को इसकी जिम्मेदारी दी गई। पवन ने इसके लिए अपने साथी कार्यकर्ताओं के साथ मिलकर गांव के प्रधान तथा अन्य प्रमुख लोगों के साथ चौपाल के बारे में चर्चा की। इसके बाद पवन ने गांव में कुछ निर्माण मजदूरों के साथ उनसे जुड़ी समस्याओं के बारे में चर्चा की और उनको चौपाल में अपनी बात रखने के लिए प्रोत्साहित किया।

उसके बाद पवन ने “निर्माण मजदूर पंचायत संगम” के रिज़वान जी से मुलाकात की और चौपाल में आने के लिए आमंत्रित किया। पवन ने रिज़वान जी से गांव में निर्माण मजदूरों के साथ की गई चर्चा को भी सामने रखा और चौपाल में समुदाय को संबोधित करने के लिए रूपरेखा तैयार की। रूपरेखा प्रस्तुत करते समय पवन ने अपने पुराने अनुभवों के आधार पर चौपाल से जुड़ी शंकाओं और चुनौतियों को रिज़वान जी के सामने रखा। जैसे कि इस चौपाल में सभी तरह के लोग आएंगे और उनकी कई तरह की समस्याएं और अपेक्षाएं होंगी। वह भी अपनी समस्याओं को इस चौपाल में रखना चाहेंगे। हो सकता है कि अगर उनकी बात सुनी नहीं गई तो वह चौपाल से असंतुष्ट भी हो सकते हैं। और अगर सभी लोगों की समस्याओं पर चर्चा की गई तो समय के अभाव में तय किए गए मुद्दों पर चर्चा न हो सके। जिससे हमारा चौपाल बुलाने का उद्देश्य पूरा नहीं हो पाएगा। इन परिस्थितियों को सोचते हुए दोनों ने निर्माण मजदूरों के साथ चर्चा की गई समस्याओं को तथ्य के आधार पर प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करने की तैयारी करते हैं।

पवन: नमस्कार प्रधान जी और अन्य साथियों आप सभी का इस चौपाल में स्वागत है। आपको सभी को इतनी अधिक संख्या में उपस्थित देखकर बहुत अच्छा लग रहा है। इससे पता चलता है कि आप अपने अधिकारों के प्रति कितने जागरूक हैं। अधिक समय न लेते हुए निर्माण मजदूरों के अधिकारों और उनके पंजीकरण पर चर्चा करने के लिए हमारे साथ आए हुए रिज़वान जी को आमंत्रित करता हूं। जो कि "निर्माण मजदूर पंचायत संगम" से जुड़े हुए हैं।

रिज़वान: नमस्कार साथियों! इतनी अधिक संख्या में निर्माण कार्यों से जुड़े भाई और बहिनों को इकट्ठा देखकर बहुत अच्छा लग रहा है। अपना कीमती समय निकालकर यहां उपस्थित होने के लिए आप सभी का बहुत धन्यवाद। पवन जी ने मुझे बताया कि आपके गांव में गली नं. 5 की रहने वाली सरला देवी के पति जो कि निर्माण मजदूर थे। पिछले साल उनकी साइट पर काम करते समय एक्सीडेंट में मृत्यु हो गई। पति की मृत्यु के बाद सरला जी को और अपने चार बच्चों का भरण–पौषण करने में काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा है। शायद ऐसे कई परिवार होंगे जो ऐसी परिस्थिति से गुजर रहे होंगे।

सलमा: रिज़वान जी मुझे भी कुछ पूछना है।

रिज़वान: ठीक है बहन! पहले सरला जी की समस्या पर चर्चा कर लेते हैं। फिर हम आपके समस्या भी सुनेंगे। जैसा कि सरला के पति के गुजर जाने के बाद उनकी घर की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं है। फिलहाल वह सरकार द्वारा चलाई जा रही विधवा पेंशन की हकदार

हैं। इसके लिए उन्हें पवन जी से बात करने पड़ेगी। परंतु सबसे बड़ी समस्या यह है कि सरला जी के पति निर्माण मजदूरों के लिए श्रम विभाग द्वारा चलाए जा रहे "दिल्ली भवन एवं सन्निर्माण श्रमिक कल्याण बोर्ड" में पंजीकृत नहीं थे। अगर वह पंजीकृत होते तो आज उनके परिवार को बोर्ड की तरफ से कई तरह के फायदे मिलते। जैसे कि काम के दौरान मृत्यु होने पर बोर्ड द्वारा जनश्री योजना के अंतर्गत ₹75000 की राशि उनके परिवार को मिलती और उनके दो बच्चों को सरकारी स्कूल में पढ़ाई पर छात्रवृत्ति भी मिलती है। इसके अलावा बोर्ड में अपना नाम पंजीकृत करने पर कई सारे फायदे मिलते हैं।

सरलाः आपका बहुत धन्यवाद कि आपने उनको इतनी जरूरी जानकारी दी लेकिन आप हमें ये बताए कि मेरे परिवार को क्या मदद मिल सकती है।

पवनः सरला जी! आप निराश न हों। आप अगर चाहें तो बहुत कुछ कर सकते हैं। आप हमारे सेंटर पर आएं वहां आपको सरकार द्वारा चलाई जा रही विभिन्न कार्यक्रमों के बारे में जानकारी मिलेगी और आप चाहें तो हमारे सेंटर पर रोजगार संबंधित ट्रैनिंग भी ले सकती है जिससे आपको काम मिलने पर आसानी होगी। इससे आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार आएगा।

रिज़वानः सलिमा बहन अब आप अपना सवाल पूछ सकती हैं।

सलमाः धन्यवाद! रिज़वान भाई। मुझे मेरी समस्या का उत्तर मिल गया।

चर्चा का विषय :

1. आपने इससे पहले भी कई कम्यूनिटी मीटिंग की होंगी तो आपको क्या लगा कि एक प्रभावी कम्यूनिटी मीटिंग करने के क्या सूचकांक (indicators) होते है?

रिजवान: और किसी का कोई सवाल है?

रामप्रसाद: जी, मुझे कुछ पूछना है। पिछले तीन साल से मेरा और मेरे बेटे का कार्ड बना हुआ है। दो साल पहले काम करते समय एक दुर्घटना में मेरे बेटे का हाथ बेकार हो गया। लेकिन अभी तक हमें कोई मुआवजा नहीं मिला।

रिज़वान: देखिए दो साल पहले हमारे पास समुदाय के स्तर पर ऐसा कोई मंच नहीं था जहां पर हम अपनी बात रख सकें। लेकिन अब हमारे पास जी० आर० सी० जैसा मंच है जो हमारी बात को प्रभावी ढंग से सरकार तक पहुंचा सकता है। इसके अलावा पहले पंजीकृत निर्माण मजदूरों की संख्या बहुत कम थी। जिसके कारण हम मुआवजा, भत्ते या पंजीकरण से जुड़े किसी और फायदे के बारे में अपनी बात सरकार तक नहीं पहुंचा पाते थे।

पवन: तो अब आप बताइए हमारे गांव से कितने भाई और बहन अपना नाम पंजीकृत करवाना चाहेंगे? कृपया आप हाथ उठाएं।

प्रधानजी: देखिए पवन और रिज़वानजी अब तो पूरा गांव आप के साथ खड़ा होने को तैयार है। लेकिन मेरे मन में एक शंका है। जैसा कि आप जानते हैं हमारे निर्माण मजदूर भाईयों और बहनों को अपने काम से बहुत कम फुरसत मिलती है इसलिए मेरा आपसे अनुरोध है कि आप कुछ ऐसा कीजिए जिससे अधिक से अधिक भाई और बहन अपना नाम पंजीकृत करवा पाएं।

पवन: प्रधानजी मैं आपसे सहमत हूं। अगर आप और गांव वाले सहयोग करें तो हम अपने गांव में एक दिन का कैम्प लगाएंगे। जहां पर आप लोगों का फॉर्म भरवाया जाएगा।

प्रधानजी: आप लोगों का बहुत धन्यवाद। इस काम के लिए हम गांव वाले आपके साथ हैं।

चर्चा के विषय :

2. कई बार कम्यूनिटी मीटिंग में पूछे गए सवालों का जवाब आपके पास नहीं होता है। ऐसी परिस्थिति में आप समुदाय को कैसे संतुष्ट करते हैं?

3. आपके विचार से पवन ने कम्यूनिटी मीटिंग को सही तरह से संचालित किया है?(हां/नहीं), कारण बताइए?

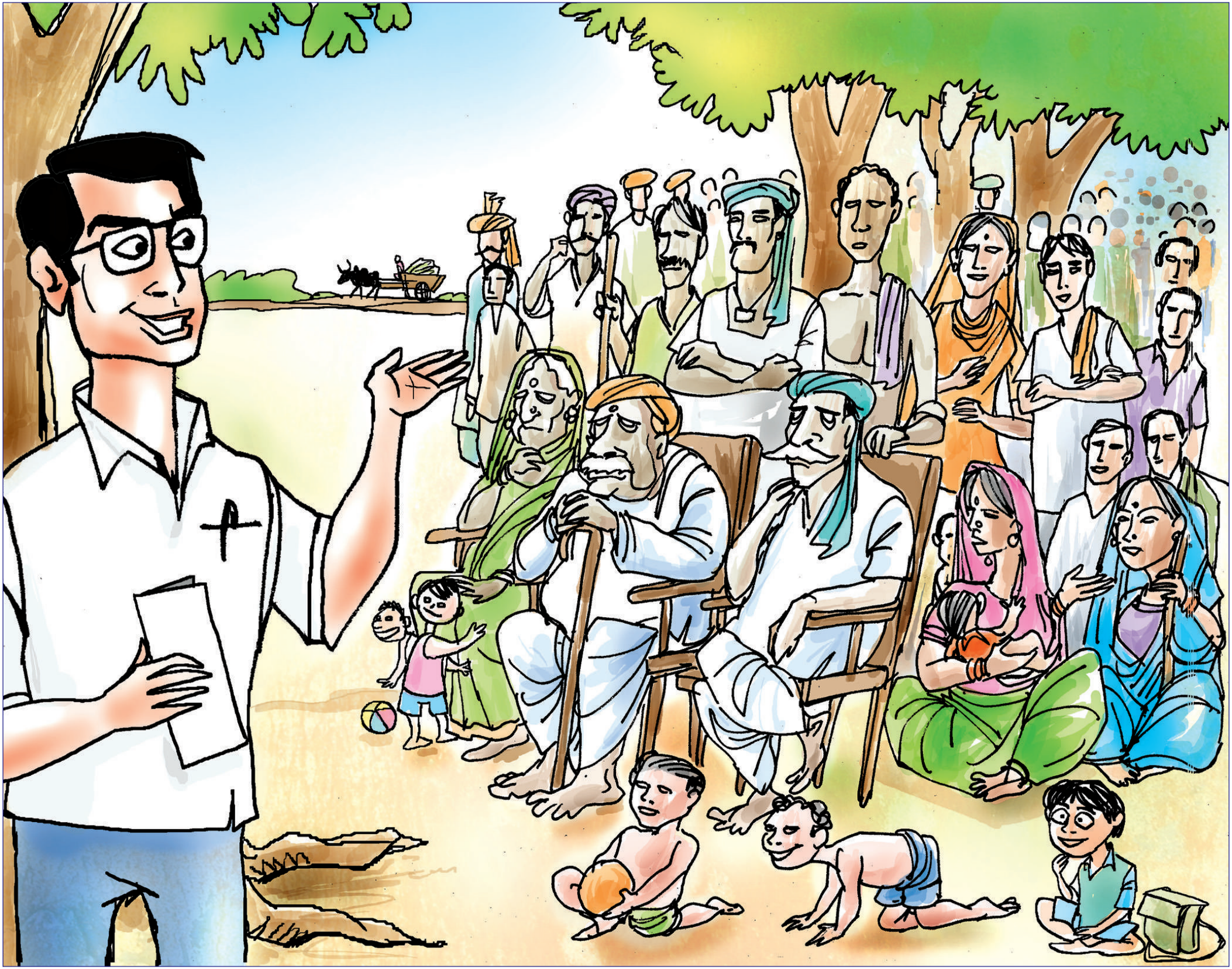

भागीदारी के फायदे
(Benefit of Partnership)

उद्देश्य :

इस अभ्यास का उद्देश्य सामुदायिक कार्यकर्ता को यह समझाना है कि जब वह समुदाय में मीटिंग करते हैं तो कई बार समुदाय की तरफ से यह सवाल किया जाता है कि वह कार्यक्रम में भागीदारी क्यों करे। इससे उन्हें क्या लाभ होगा?

सारांश

अंजु एक कम्यूनिटी मोबिलाइजर है। एक दिन वह SHG आउटरीच वर्कर राधिका को लेकर बस्ती में महिलाओं के साथ स्वयं सहायता समूह की मीटिंग के लिए गई। बस्ती की महिलाएं अंजु को तो जानती है लेकिन वह राधिका से पहली बार मिल रही है इसलिए वह पूछती है कि यह कौन है? अंजु ने राधिका का परिचय देते हुए बताती है कि यह भी उसके साथ सेंटर पर SHG आउटरीच वर्कर के तौर पर काम करती है और यह आपको स्वयं सहायता समूह बनाने के बारे में जानकारी देगी।

राधिका महिलाओं के साथ बात शुरू करने से पहले उनसे पूछती है कि उन्हें जब पैसों की जरूरत होती है तो वह क्या करती है। मीटिंग में मौजूद महिलाएं बताती हैं कि जरूरत के समय वह अपने पड़ौसी से या रिश्तेदार से पैसा ले लेती है। राधिका फिर उनसे पूछती है कि अगर पड़ौसी या रिश्तेदार के पास भी पैसे नहीं हुए तो वह क्या करती है। महिलाएं के अलग–अलग जवाब देती हैं।

जब राधिका स्वयं सहायता समुह के बारे में बताना शुरू करती है कि तो महिलायें जिज्ञासा के साथ पूछती हैं कि इससे उन्हें क्या फायदा मिलेगा?

अंजू: नमस्कार साथियों। आप सभी कैसे हैं?

समुदाय की महिलायें: दीदी हम सब तो ठीक हैं। आज आपके साथ एक और दीदी आई हैं, यह कौन हैं?

अंजू: जी हाँ। आज हमारे साथ राधिकाजी हैं। जो कि SHG आउटरीच वर्कर हैं और हमारे सेंटर पर ही काम करती हैं। आज यह आपको स्वयं सहायता समूह के बारे में बताएंगी। यह स्वयं सहायता समूह क्या है? कैसे काम करता है?

राधिका: अभी आपको अंजू जी ने बताया कि आज हम स्वयं सहायता समूह के बारे में बात करेंगे। परन्तु इससे पहले मैं आपके सामने एक सवाल रखना चाहती हूँ। जैसा कि आपको कभी न कभी कुछ अधिक पैसों की जरूरत पड़ती होगी उस जरूरत को आप कैसे पूरा करते हैं।

शबनम: छोटे-मोटे खर्चों के लिए तो पैसों की जरूरत पड़ती रहती है। अगर थोड़े से पैसों की जरूरत होती है तो पड़ौसी से ले लेती हूँ। ऐसे ही काम चल जाता है। कभी उसको जरूरत पड़ती है तो मैं दे देती हूँ।

कमला: मैंने एक गुल्लक बना रखा है। जिसमें मैं थोड़ा-थोड़ा पैसा डालती रहती हूँ। जरूरत के समय उसमें से पैसे निकाल लेती हूँ।

राधिका: यह तो बात सही है छोटे-मोटे खर्चों के लिए आप पड़ोसियों या रिश्तेदारों से पैसे ले सकती हो। परन्तु कई बार ऐसा भी होता होगा कि उनके पास भी पैसा नहीं होता होगा। या फिर आपको ज्यादा पैसों की जरूरत होगी तब आप कैसे जुगाड़ करेंगी।

विद्या देवी: जी हाँ, कई बार उनके पास भी पैसे नहीं होते। ऐसे में कई बार ब्याज पर पैसा लेना पड़ता है।

राधिका: देखिए अगर साहूकार से पैसे लेती हैं तो ब्याज भी देना पड़ता होगा। क्यों न ऐसा किया जाए कि हम आपस में मिलकर एक गुल्लक बनाए जिसमें सभी कुछ पैसे जमा करेंगे और जरूरत के समय पैसे ले सकेंगे।

शबनम: यह बनाने से हमें क्या फायदा होगा?

चर्चा के विषय :

1. आपको क्या लगता है समुदाय की क्या प्रतिक्रिया रही होगी?
2. अगर आपके सामने भी ऐसी परिस्थिति होगी तो महिलाओं के लिए आपका जवाब क्या होगा?

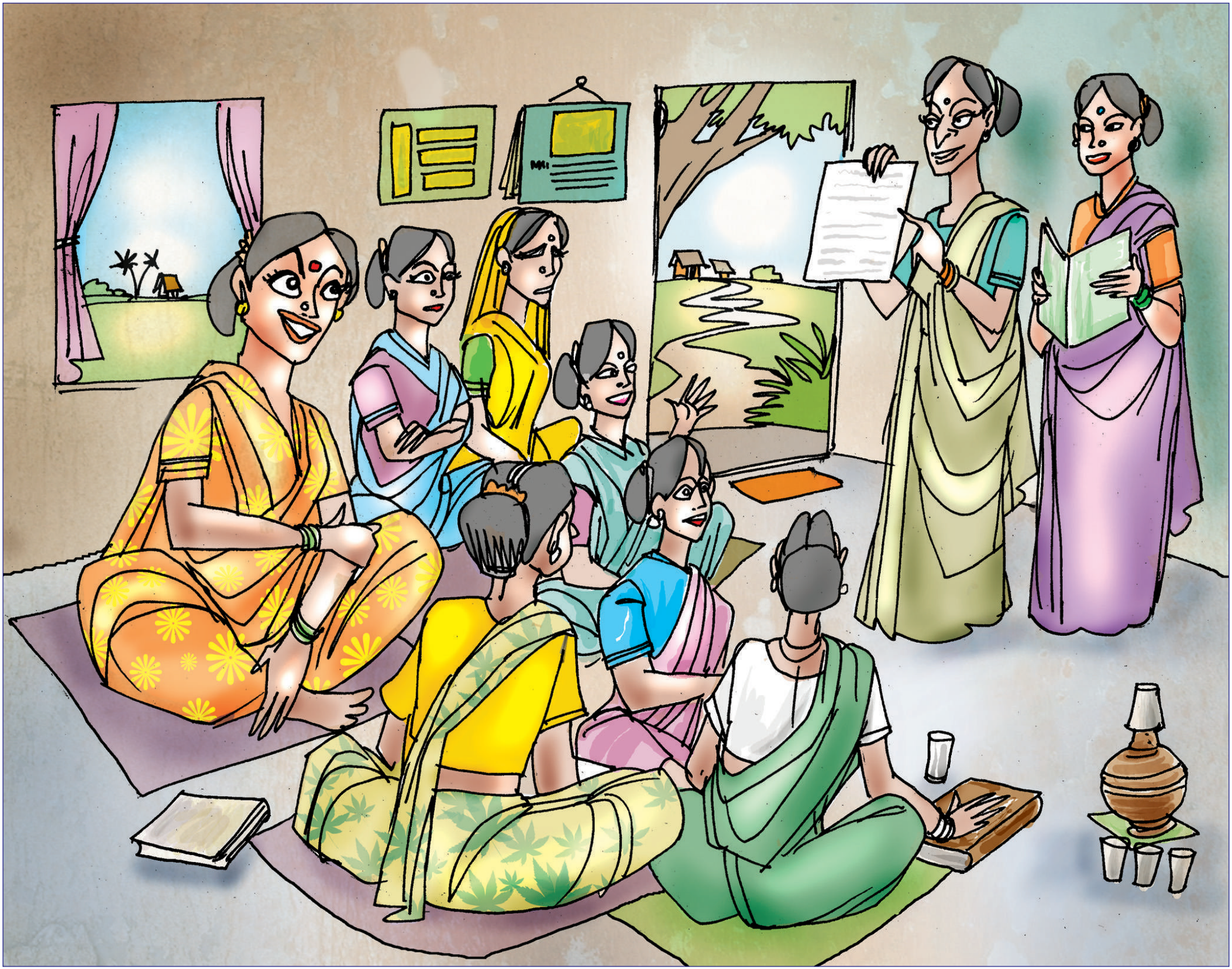

भाग-ग

सरकारी योजनाओं और कार्यक्रम पर संवाद
(Communicating on Schemes)

उद्देश्य :

इसका भाग में सामुदायिक कार्यकर्ताओं और समुदाय के बीच संवाद पर विशेष ध्यान दिया गया है कि किस प्रकार सामुदायिक कार्यकर्ता समुदाय को एक दोस्ताना (Community Friendly Mechanism) अंदाज में योजनाओं की सही जानकारी देंगे। यह कार्यकर्ता जानकारी देने वाले व जानकारी पाने वाले के बीच एक कड़ी का काम करते हैं।

समुदाय के साथ संवाद करने के लिए यह जरूरी है कि कार्यकर्ताओं को :

- स्पष्ट एवं संपूर्ण जानकारी होनी चाहिए।
- जानकारी को उपयोगकर्ता के अनुकूल बनाएं।
- उपयोगकर्ता के साथ संवाद कर उनके संदेह/अविश्वास को संबोधित करें।
- अनुभव बांटने को प्रोत्साहित करें।
- समुदाय की सहमति लेना।

इस भाग का मकसद न केवल जानकारी देना है बल्कि समस्याओं का निवारण करना भी है।

सारांश – निर्माण मजदूरों का पंजीकरण

राजीव, 'जीत' जी.आर.सी. में कम्यूनिटी मोबिलाइजर है। एक दिन बस्ती में कम्यूनिटी मीटिंग के दौरान लोगों से पता चलता है कि रामू जो कि एक निर्माण मजदूर है वह साइट पर काम करते वक्त एक एक्सीडेंट में घायल हो गया है। रामू का हालचाल मालूम करने के लिए राजीव उसके घर जाता है। इस दुर्घटना के बाद रामू बहुत घबराया हुआ है कि उसके बाद उसके परिवार का क्या होगा। वह राजीव को अपनी दुविधा बताता है। राजीव उससे पूछता है कि क्या उसने पिछले हफ्ते चौपाल पर हुई निर्माण मजदूरों के पंजीकरण के लिए बुलाई गई मीटिंग में आया था।

रामू बताता है कि उस दिन वह एक साइट पर काम कर रहा था इसलिए वह मीटिंग में नहीं आ पाया। वह राजीव से सरकार द्वारा निर्माण मजदूरों के लिए चलाई जा रही योजना के बारे में पूछता है और इस योजना का लाभ उठाने के लिए उसको क्या करना पड़ेगा।

राजीव: अरे रामू कैसे हो! मुझे पता चला है कि काम करते समय तुम्हारा एक्सीडेंट हो गया था और तुम घायल हो गए थे।

रामू: (बिस्तर से उठते हुए): नमस्कार राजीव जी, अभी तो ठीक नहीं हूँ। भगवान की दुआ से बाल-बाल बच गया, वरना जान चली जाती। सर जी, मैं तो यह सोच कर घबरा रहा हूँ कि मेरे बाद मेरी बीबी और बच्चों का क्या होगा। मेरे पास तो कोई पूंजी भी नहीं है कि घर का गुजारा चल जाता। और मेरी बीबी भी इतनी पढ़ी-लिखी नहीं है कि बाहर जाकर कुछ काम कर सके।

राजीव: अरे रामू, तुम क्या सोचने लगे? तुम पिछले हफ्ते चौपाल में नहीं आए थे जहाँ पर श्रम विभाग द्वारा निर्माण मजदूरों के लिए चलाई जा रही योजनाओं के बारे में बताया गया था।

रामू: नहीं सर जी। आपने उस चौपाल के बारे में बताया तो था। लेकिन उन दिनों मैं एक जगह काम कर रहा था इसलिए नहीं आ पाया था। और मैंने किसी से पूछा भी नहीं। सर जी यह कौन सी योजना है? इससे मुझे क्या फायदा होगा?

राजीव: यह योजना आप जैसे निर्माण कार्यों में लगे मजदूर भाईयों के लिए ही है। इसमें भवन एवं सन्निर्माण से जुड़े सभी कर्मचारी बोर्ड में पंजीकरण (निर्माण मजदूरों का पंजीकरण) करवा कर अपना तथा अपने परिवार का सुरक्षित एवं उज्जवल भविष्य सुनिश्चित कर सकते हैं।

रामू: इसके लिए क्या करना पड़ता है?

चर्चा के विषय :

1. आप किस प्रकार से रामू को योजना की जानकारी दोगे?

   - क्या आप रामू को कहोगे कि पहले पूरी तरह से स्वस्थ हो जाये। उसके बाद जी.आर.सी. सेंटर पर आकर पूरी जानकारी दोगे?
   - क्या आप उसको तुरंत जानकारी दोगे?
   - क्या आप जानकारी देने के साथ-साथ समस्या का हल करोगे?
   - क्या आप उसकी असुरक्षा को योजना के साथ जोड़ते हुए उसको योजना के बारे में बताओगे?

2. आप रामू के परिवार को क्या सुरक्षा तंत्र प्रदान कर सकते हो?

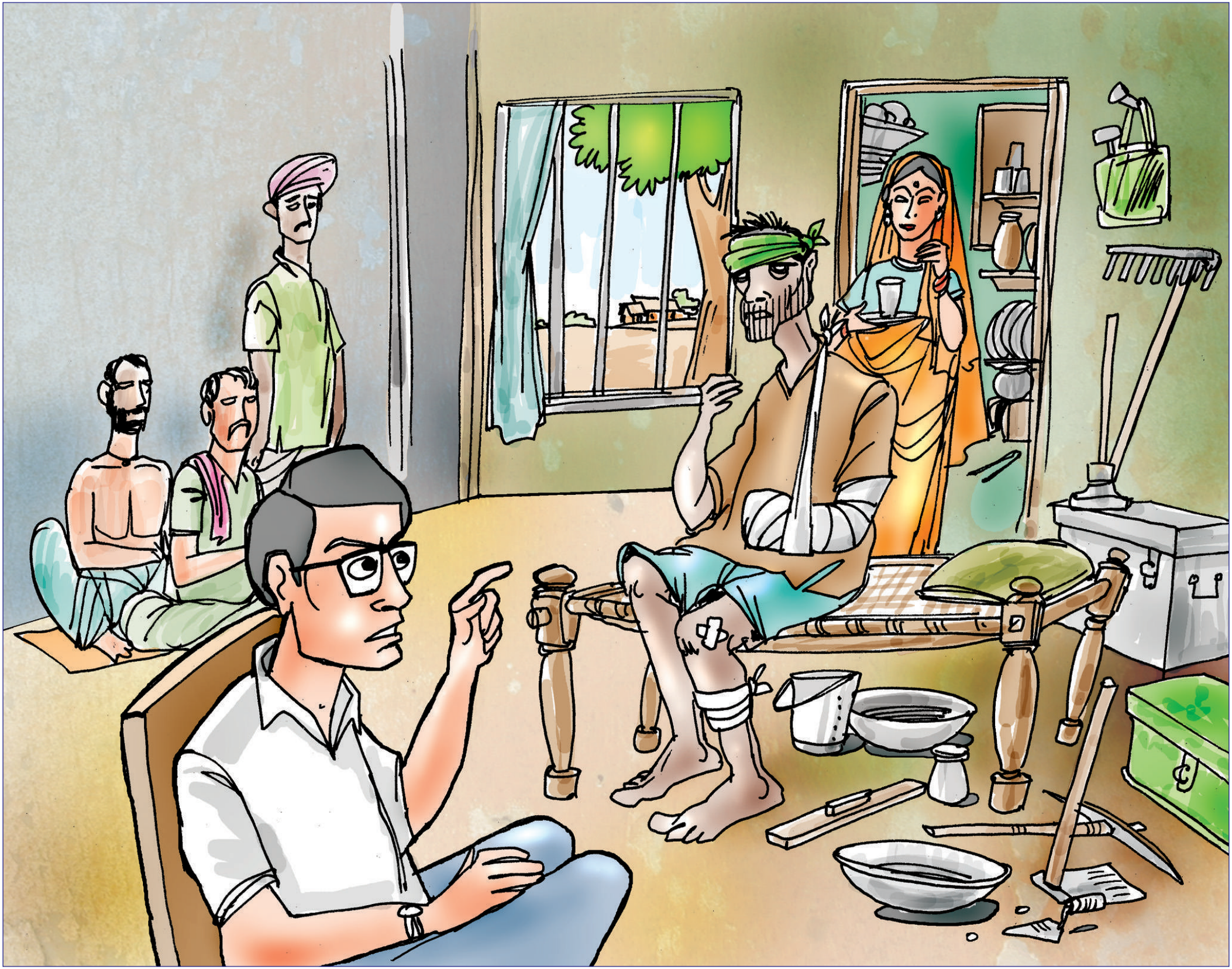

सारांश – स्वर्ण जयंती शहरी रोजगार योजना

दीपाली 'रे वेलफेयर ट्रस्ट' सावदा घेवरा में कम्यूनिटी मोबिलाइजर है। एक दिन वह बस्ती में सामुदायिक मीटिंग के लिए जा रही थी तभी बस्ती की कुछ महिलाएं दीपाली को रोक कर बातें करने लगती है। यह महिलाएं दीपाली को नुक्कड़ पर खड़े कुछ युवाओं को देखते हुए कहते हैं कि इन लड़कों के पास कोई काम नहीं है। इन में से कई तो पढ़े–लिखे हे पर उनके पास कई काम नहीं है। इनके परिवार के लोग भी इनसे दुखी है कि यह सारा दिन घूमते रहते हैं या फिर नुक्कड़ पर खड़े रहते हैं। क्या आपके पास इनके लिए कोई योजना नहीं है?

तभी एक दूसरी महिला बीच में बोलती है कि युवाओं को ही इस योजना की जरूरत है। हमारे मोहल्ले में कई ऐसे परिवार हैं जहां महिलाओं को भी काम की जरूरत है। वह मकान नम्बर 454 में रहने वाली बानो का बारे में बताते हुए कहती हैं कि उसके घर में बूढ़े सास–ससुर, पति और 5 बच्चे हैं। बानों के पति की छोटी सी कबाड़ी की दुकान है। बानों घर पर ही छोटा–मोटा सिलाई का काम कर लेती। बानों पैसों की कमी के कारण अपनी दुकान नहीं खोल पा रही है। क्या बानो जैसी महिलाओं के लिए भी कुछ हो सकता है?

दीपाली उनको बताती है कि इन बेरोजगार युवाओं और महिलाओं के लिए भी सरकार की योजनाएं हैं। जिसमें सरकार उन युवाओं और महिलाओं को जो कि अपना खुद का काम करना या करवाना चाहते हैं उनको काम शुरू करने के लिए ऋण उपलब्ध करवाती है। वह बस्ती की महिलाओं को कहती है कि वहीं अपनी बस्ती में परसों एक मीटिंग रखवाओ। उस मीटिंग में वह कविता को भी लेकर आएगी जो कि कम्यूनिटी ऑर्गनाइजर (साथी) है। वह आपको इस योजना के बारे में पूरी जानकारी देगी।

तीसरे दिन दीपाली और कविता महिलाओं के साथ मीटिंग करती हैं। जहां वह सरकार द्वारा बेरोजगार युवाओं एवं महिलाओं को खुद का रोजगार शुरू करने के लिए सरकारी योजनाओं के बारे में बताती है।

दीपाली: नमस्कार बहनों! आप कैसे हैं। परसों ललिता जी वहां रास्ते में मिली थीं। वह बता रही थी कि बस्ती में कई बेरोजगार युवा हैं और यह भी पूछ रही थी कि क्या इनके लिए कोई योजना है। इसी तरह से कई महिलाएं हैं जो कि खुद का काम करना चाहती है। यह कैसे अपना काम शुरू कर सकती हैं?

पिछले साल के सर्वे के आकंड़ों से यह निकलकर आया है कि इस बस्ती में 18-35 साल की उम्र के काफी युवा हैं। उनमें से जो पढ़े लिखे हैं और बेरोजगार हैं। आज हमारे साथ कविता जी हैं जो कि हमारे सेंटर पर कम्यूनिटी मोबिलाइजर हैं। इनको आप 'साथी' भी कह सकती हैं। यह आपको इन योजनाओं के बारे में बताएंगी।

कविता: वैसे तो वह लोग जो अपना खुद का काम शुरू करना चाहते हैं उनके लिए सरकार की कई योजना है। लेकिन आज हम शहरी गरीबों के लिए चलाई जा रही 'स्वर्ण जयन्ती शहरी रोजगार योजना' जो कि एक प्रमुख योजना है के बारे में बात करेंगे। सरकार इस योजना के द्वारा जरूरतमंदों को स्वावलम्बी (अपने पैरों पर खड़े होना) बनाना चाहती है। इस योजना में महिलाओं एवं पुरूषों को खुद का काम शुरू या फिर अपने काम को आगे बढ़ाने के लिए व्यक्तिगत लोन या गरीब महिलाओं द्वारा गठित स्वयं सहायता समूह/थ्रीफट एण्ड क्रैडिट सोसाइटी को सामुहिक लोन उपलब्ध करवाया जाता है। इसके अलावा अकुशल युवाओं और महिलाओं को प्रशिक्षण दिलवाने की भी व्यवस्था की जाती है जिससे कि वह रोजगारमुखी व्यवसायों का प्रशिक्षण लेकर और अपना काम शुरू कर सके या नौकरी पा सकें।

इस योजना की एक अच्छी बात यह है कि समुदाय खुद से यह तय करता है कि उनकी जरूरतें क्या हैं और समिति बनाकर जरूरतमंद परिवारों तक इस योजना का लाभ पहुंचा सकते हैं।

चर्चा के विषय :

1. कविता बस्ती की महिलाओं को 'स्वर्ण जयंती शहरी रोजगर योजना' के बारे क्या जानकारी देगी?

2. सरकार की अन्य कौन सी योजनाएं हैं जिसके साथ बानो जैसी महिलाओं और युवाओं को जोड़ा जा सकता है?

सारांश – ट्रेनिंग

गुरप्रीत कौर कम्यूनिटी मोबिलाइजर है। एक दिन वह बस्ती में कम्यूनिटी मीटिंग के बाद लौट रही थी तभी गुड्डी जो कि बस्ती में ही रहने वाली एक 18 साल की लड़की है उसको रोकती है और कहती है कि वह उससे बात करना चाहती है। गुड्डी बताती है कि उसके परिवार में सात लोग हैं। उसके पिताजी मोची का काम करते हैं। माँ एक घरेलू महिला है। इसके अलावा दो बहने हैं। परिवार में पिताजी पुराने विचारों के हैं जिसकी वजह से दोनों बहनों की ज्यादा पढ़ाई नहीं हो पाई। केवल पास के स्कूल में पाँचवी तक ही पढ़ पाई हैं। गुड्डी कहती है कि वह पढ़ने के साथ–साथ कुछ ऐसा काम सीखना चाहती है जिससे कुछ आमदनी हो और उसके परिवार की मदद हो सके। गुड्डी आगे कहती है कि उसके माता–पिता पुराने विचारों के हैं और लड़कियों को बाहर भेजने के लिए तैयार नहीं हैं।

मैंने सुना है कि आपके सेंटर पर लड़कियों को पढ़ाया जाता है और काम की ट्रेंनिग भी दी जाती है। मैंने इसके बारे में अपनी माँ से बात की थी वह तो चाहती है परन्तु पिताजी तैयार नहीं है। अगर आप मेरे घर पर आकर मेरे परिवार को समझाएं तो हो सकता है कि वह तैयार हो जाएं।

गुरप्रीत पूछती है कि उसके पिताजी किस समय घर पर मिलते हैं। गुड्डी उसको बताती है कि वह शाम को 6 बजे के बाद घर आ जाते हैं। गुरप्रीत कहती है कि वह कल शाम को 6 बजे के बाद उनके पिताजी से मिलने के लिए आएगी।

अगले दिन गुरप्रीत शाम को गुड्डी के घर जाकर उसके पिताजी से मिलती है।

गुड्डी: नमस्ते दीदी, आइए बैठिए, यह मेरे पिताजी हैं, यह माँ, दादी और भाई है। बाकि दो बहनें अभी बाहर तक गई हैं।

गुरप्रीतः नमस्ते, आप सभी कैसे हैं। मेरा नाम गुरप्रीत कौर है। मैं हर्ष विहार के 'के' ब्लॉक में जो सेंटर चल रहा है वहाँ कम्यूनिटी मोबिलाइजर हूँ। यह दिल्ली सरकार का कार्यक्रम है। इससे पहले हमने इस पूरे इलाके को सर्वे किया था। सर्वे से हमें बस्ती में रहने वालों की परिस्थिति के बारे में पता चला कि प्रत्येक परिवार की सामाजिक और व्यवसायिक स्थिति कैसी है। इसके साथ-साथ हम यह भी देख रहे हैं कि बस्ती में 15 से 35 साल की कितनी लड़कियाँ और महिलाएँ हैं। जिन लड़कियों मे पढ़ाई छोड़ दी है या स्कूल नहीं जा पाई उनके लिए हमारे सेंटर पर शिक्षा एवं व्यवसायिक प्रशिक्षण की व्यवस्था है। व्यवसायिक प्रशिक्षण में हम लड़कियों को सिलाई-कढ़ाई, ब्यूटिशियन, कम्पयूटर आदि की ट्रेनिंग देते हैं। जिससे वह ट्रेनिंग लेने के बाद अपने पैरों पर खड़ी हो सकें। इसके अलावा जो लड़कियाँ एवं महिलाएँ पढ़ना चाहती हैं उनको अनौपचारिक शिक्षा भी दी जाती है। इसके लिए बहुत दूर जाने की जरूरत नहीं होती। बस हमारे सेंटर पर आना होता है जो कि आपके घर के पास है।

रमेश (गुड्डी के पिताजी): लेकिन हम तो अपनी लड़कियों को आगे पढ़ाना नहीं चाहते हैं। हमारी बिरादरी में लड़कियों को ज्यादा पढ़ाया नहीं जाता। हमारी बिरादरी में अगर लड़कियाँ ज्यादा पढ़ जाती हैं तो उनकी शादी के लिए लड़का मिलने में मुश्किल होती है। दूसरा इतनी थोड़ी सी आमदनी में चारों बच्चों पढ़ाना मुश्किल।

गुरप्रीत: मैं आपकी दुविधा को समझ सकती हूँ। वैसे तो घर बैठ के भी पढ़ाई की जा सकती है। अगर यह पढ़ना नहीं चाहती है तो इनको कोई हुनर सीखा सकते हैं जिससे यह आधे वक्त में या फिर घर बैठकर ही छोटा-मोटा काम कर परिवार की मदद कर सकती है। हम यह भी कोशिश करते हैं कि व्यवसायिक प्रशिक्षण के बाद उनको कहीं नौकरी मिल जाए या फिर वह अपना काम शुरू करना चाहती हैं तो उनको लोन दिलवाने में भी सहायता करते हैं। आपकी लड़कियाँ ही नहीं बल्कि आंटीजी भी हमारे सेंटर पर आकर यह कोर्स कर सकती हैं।

रमेश: बहन जी आप सही कह रही हैं। आज के समय में एक व्यक्ति की आमदनी से घर का गुजारा नहीं चल सकता है। मैं इनको आगे पढ़ाने के लिए तैयार नहीं हूँ लेकिन अगर आप इनको ट्रेंनिग दिलवा दें तो शायद यह अपने पैरों पर खड़ी हो सके और अपने परिवार की मदद कर सके। मैं एक बार अपने परिवार में बात कर लूँ। आपने जो जानकारी दी उसके लिए आपको बहुत-बहुत धन्यवाद।

गुरप्रीत: मैं एक और बात आपको बताना चाहती हूँ कि हमारे सेंटर पर जो भी प्रोग्राम चल रहे हैं उसके लिए कोई भी फीस नहीं ली जाती है। सरकार की तरफ से यह एकदम मुफ्त है।

रमेश: यह तो आपने बहुत अच्छी बात बताई। मैं तो यह सोच कर परेशान था कि पता नहीं कितना पैसा लगेगा।

गुरप्रीत: तो मैं आशा करती हूँ कि आप इन दोनों लड़कियों को सेंटर पर जरूर भेजेंगे। अच्छा मैं चलती हूँ। नमस्ते!

चर्चा के विषय :

गुरप्रीत, गुड्डी के परिवार को और क्या जानकारी दे सकती है।

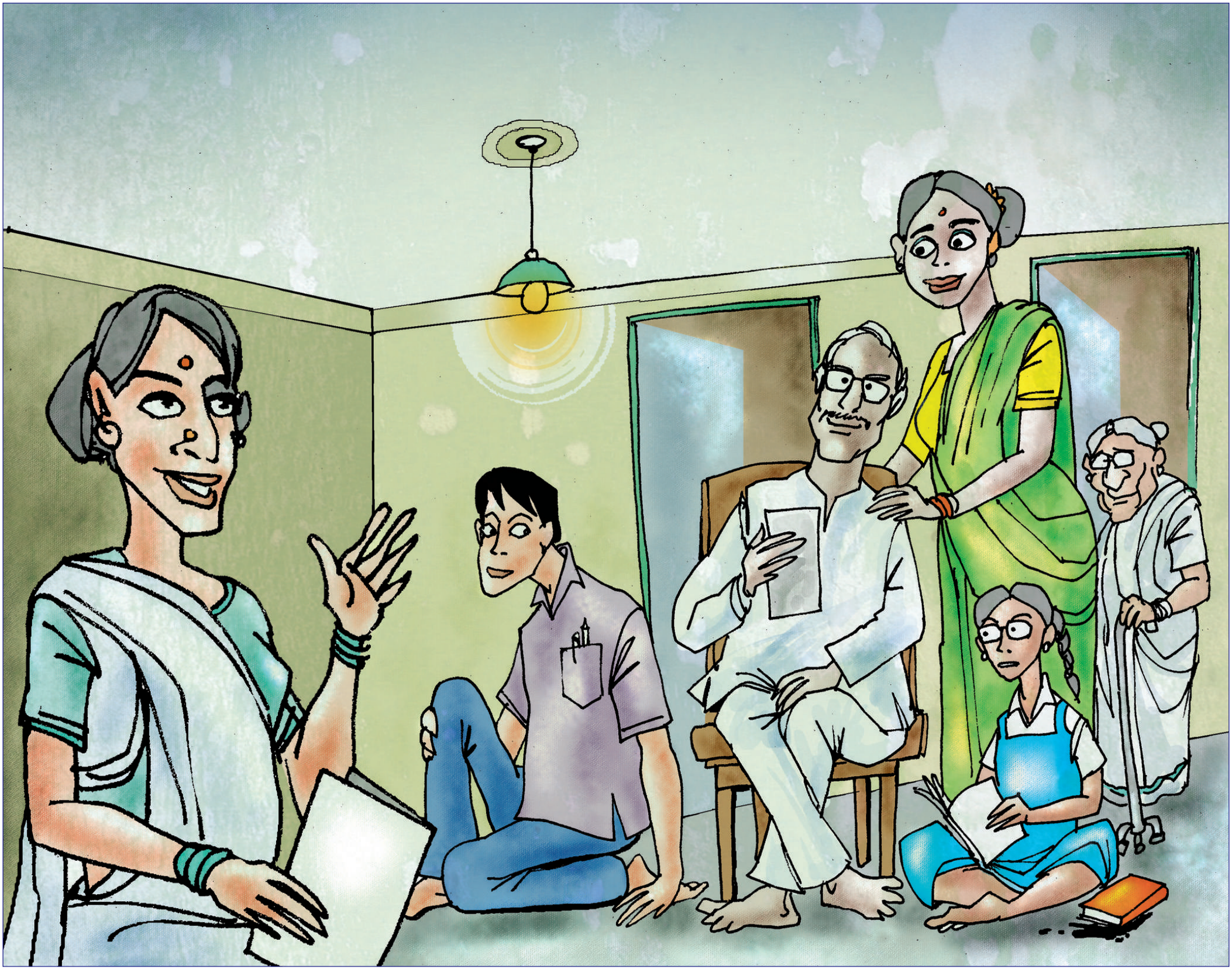

This Flip Chart has been prepared for Samajik Suvidha Sangam, New Delhi

Concept, Storyboard, Script and Visualization

Akhila Sivadas
Pramod Kumar Chauhan
Sambit Mohanty
Girija Sahu

H - 2 B, First Floor, Kalkaji, New Delhi - 110019, India
Telefax : 011 26410133, 26418846, 26418847
Email : cfardelhi@gmail.com Website : www.cfar.org.in

Illustrations: Abhimanyu Sinha

Cover Design and Printing : Shriwal Advertising & Designing

सामाजिक सुविधा संगम
mission convergence

Supported by Samajik Suvidha Sangam

Centre for Advocacy and Research

Prepared by Centre for Advocacy & Research

Samajik Suvidha Sangam
Programme Management Unit
Room No.-403 & 404, 'B'-wing, 4th Level
Delhi Secretariat, I.P. Estate
New Delhi - 110002
(INDIA)
Phone: 011-23392398
Telefax: 011-23392408
E-mail: samajik.suvidha.sangam@gmail.com